कार्तिक मोहन डोगरा

# अदम गोंडवी: साहित्यिक जनतंत्र और देहाती तंज से उपजी शायरी

आज चाय की टपरी पर , चाय की प्याली के हर घूंट के साथ एक शेर कहा जा रहा था। उसी

बीच एक व्यक्ति ने शेर पढ़ा , "ग़ज़ल को ले चलो अब गाँव के दिलकश नज़ारों में,मुसलसल फन का दम घुटता है इन अदबी ईदारों में" 1 मुझे तुरंत महसूस हुआ की हिन्दी ग़ज़ल का अगर कोई बड़ा नाम होगा दुष्यंत के बाद तब वह अदम गोंडवी का होगा। अदम की शायरी एक अलग ही रंग में रंगी हुई है। वह ग़ज़ल कहते है और ऐसी कहते है कि किसी के दिल से चिपक जाए। इसलिए इस लेख में हम अदम की शायरी को समझते हुए इस बात पर विचार विमर्श करेंगे की उनकी शायरी क्या साहित्य में जनतंत्र की स्थापना करता है या नहीं। और उनके साहित्य को मुख्य आलोचना के पाठ तक क्यूँ नहीं आने दिया गया है।

जब हम देखते है उर्दू ग़ज़ल के इतिहास में तब हम को नज़ीर अकबरबादी ही नजर आते है जो जनता के एक कवि है। उसी तर्ज़ पर अदम अपनी शायरी की रचना करते है। मैनेजर पाण्डेय अदम के लिए इन अल्फ़ाज़ का प्रयोग करते है।

"अदम गोंडवी को पढ़ते हुए मुझे उर्दू का केवल एक शायर याद आता है। वह है नज़ीरनअकबराबादी। नज़ीर की शायरी की भाषा के रूप, उनकी संवेदना और सोच के स्वरूप, उनकी काव्य-दृष्टि, और आमजन की जिन्दगी की मुसीबतों की उनकी गहरी चिन्ता अदम गोंडवी की भी शायरी में मौजूद है, उसी शिद्दत और शिनाख्त के साथ। मेरी जानकारी में उर्दू और हिन्दी में अकेले कवि नज़ीर अकबराबादी ही हैं जिन्होंने मुफ़्लिसी, भूख, रोटी और चपाती पर कविताएँ लिखीं।" 2 उस के बाद शायद अदम ऐसे शायर है जो इन विषयों पर अपनी कलम से लेखनी चलाते है।

जब भी हम ऐसा साहित्य पढ़ते है तब मालूम चलता है कि साहित्य को जनतान्त्रिक बनाने का काम यह लेखक कर रहे है। साहित्य में जनतंत्र करके पाण्डेय जी का एक लेख है उनकी पुस्तक आलोचना में सहमति असहमति है। इस लेख में वह इस आलोचना की पदावली को परिभाषित करते है। एक नजर में साहित्य में जनतंत्र आलोचनात्मक शब्दावाली को समझ लेते है।

"नागार्जुन कभी-कभी लोक प्रचलित पुराने गीतों और उनकी धुनों का उपयोग करते हुए समकालीन वास्तविकता और विचार की कविता लिखते हैं। ताकि जन उस कविता के रूप और उसकी धुन से आत्मीयता अनुभव करते हुए उसमें व्यक्त वास्तविकता और विचार को सहज रूप से आत्मसात कर सके। ऐसी ही उनकी एक लोकप्रिय कविता है : आओ रानी, हम ढोगे पालकी, यही हुई है राय जवाहर लाल की नागार्जुन कविता को जनता तक पहुंचाने के लिए भक्तिकाल के सन्तों और भक्तों की कविता की पंक्तियों और ढाँचों का उपयोग करते हैं; क्योंकि वे जानते हैं कि भक्ति काल की कविता जन जीवन में रमी हुई कविता है। उनकी एक कविता है अमेरिका के राष्ट्रपति जॉनसन पर जो सन्त रैदास के प्रसिद्ध पद प्रभु जी, तुम चन्दन हम पानी की मदद से लिखी गयी है। वह

कविता इस प्रकार है :हम काहिल हैं,

हम भिखमंगे,

तुम हो औढरदानी

अब की पता चला है प्रभुजी,

तुम चन्दन हम पानी

हम निचाट धरती निदाघ की,

तुम बादल बरसाती

अबकी पता चला है प्रभुजी

तुम दीपक हम बाती।" 3

"कविता में जनतन्त्र केवल रूप के माध्यम से ही नहीं आता। उसमें सच्चा जनतन्त्र तब आता है, जब कविता में जन हो, उसका जीवन हो, उसके जीवन की वास्तविकताएँ, समस्याएँ, आशाएँ और आकांक्षाएँ हों, उसका सुख-दुख हो और उसके जीवन की प्रकृति, संस्कृति और विकृति भी हो यह सब नागार्जुन की कविता में बहुत है और वह जगजाहिर है, इसलिए यहाँ उसकी चर्चा अनावश्यक है। नागार्जुन के समानधर्मा हिन्दी के अनेक कवि, कुमार विकल के शब्दों में 'जनतन्त्र में उग रहे वनतंत्र' को देखकर चिन्तित और परेशान होते रहे हैं और उन्होंने अपनी चिन्ता और परेशानियों को अपनी कविताओं में व्यक्त किया है।" 4 जब हम अदम की शायरी का रूप देखते है तब दो बातें स्पष्ट रूप से नजर आती है। पहली यह की उनका रूप गाँव के चुटीले मजाक से उपजा है। दूसरा इस बात का विस्तार है कि यह चुटीलापन अपने आप में इतना सूक्ष्म होता है कि आप को आलोचनात्मक नजर की आवश्यकता पड़ती है। यह दोनों बातें अदम के साहित्य में मौजूद मिलती है। उनके यह दो शेर अगर हम देखेंगे तब यह बात स्पष्ट रूप से नजर आ जाएगी।

जो डलहौजी न कर पाया वो ये हुक्काम कर देंगे।

कमीशन दो तो हिन्दुस्तान को नीलाम कर देंगे॥ 5

सदन को घूस देकर बच गयी कुर्सी तो देखोगे।

अगली योजना में घूसखोरी आम कर देंगे ॥ 6

काजू भुने प्लेट में व्हिस्की गिलास में

उतरा है रामराज विधायक निवास में 7

इसी बात को और पुख्ता करती है मैनेजर पाण्डेय की बात जो उन्होंने अपने लेख में लिखी है।

उसको मैं नीचे उद्धृत कर रहा हूँ:-

"अदम की शायरी में गहरी आलोचनात्मक चेतना है। वे जानते हैं कि तन्कीद के जज्बे को मर जाती है कीम;, इसीलिए वे आम लोगों में जालोचना का जज्बा पैदा करना चाहते हैं। उनकी आलोचनात्मक चेतना अमूर्त और हवाई नहीं है, अनुभव जन्य और इतिहास सम्मत है। भारतीय संस्कृति और धर्म के बथों की असलियत सामने लाते हुए वे उत्पीड़ित जनता की आवाज बनकर कहते हैं।" 8 इस के साथ जब साहित्य में कोई लेखक जनतंत्र की स्थापना करता है। तब वह रूप के साथ साथ मानवीय मूल्यों की बात करता है। मेरे हिसाब से भूख और इज्जत दो बड़े मानवीय मूल्य है। जो अदम की शायरी में देखे जा सकते है। जब आप उनकी पुस्तक समय से मुठभेड़ देखते है तब पाते है कि उनकी शायरी में बीस शेर में भूख का जिक्र आया है। नीचे उद्धृत कुछ शेर इस बात को पाठक के लिए स्पष्ट कर देंगे। भूख के अहसास को शेरो सुखन तक ले चलो।

या अदब को मुफलिसों की अन्जुमन तक ले चलो।। 9

कहीं पर भुखमरी की धूप तीखी हो गयी शायद ।

जो है संगीन के साये की चर्चा इश्तहारों में ।। 10इस सब चर्चा के आधार पर यह बात कह सकते है कि अदम साहित्य में जनतंत्र की स्थापना करते है। साथ ही जो समाज का हिस्सा जिस को साहित्य ने एक अरसे तक बाहर रखा उसको

भीतर लाकर उस से जुड़ें विषयों पर बात करते है। अब हम इस लेख के अंतिम हिस्से की तरफ रुख करते है और इस बात को समझने का प्रयास करते है कि हिन्दी आलोचना ने अदम जैसे शायर को मुख्य धारा से बाहर क्यूँ रखा? इस प्रश्न के उत्तर के लिए हम हबीब के नाटक आगरा बाजार की बात करें तब इस बात को समझा जा सकता है कि हबीब जिस शायर को बिना मंच पर लाए दर्शकों तक उस शायर को पहुंचा देते है। उस नाटक में नज़ीर की शायरी का प्रयोग हुआ है। परंतु अदम भी

उसी परंपरा के शायर है इसलिए जिन कारणों से नज़ीर को मुख्य धारा से बाहर रखा गया था उन्ही कारणों की वजह से अदम भी नजीर के साथ नजर आते है। और यह कारण कोई बहुत बड़ा रहस्य नहीं है। इस को सरल अल्फ़ाज़ में कहा जा सकता है।

यह कारण बस इतना सा है कि अदम नज़ीर जैसा कवि साहित्य को जनतान्त्रिक बनाते है और यह शास्त्र से हट कर आम जनता के मुद्दों पर शायरी करते है। इसलिए यह आलोचकों की

नजर से हमेशा लुप्त रहते है। हबीब तनवीर ने अपने नाटक से नज़ीर को एक पहचान तो प्रदान की है। अदम की शायरी की खास बात यह है कि वह जनता की जुबान में लिखी हुई है । और वह जनता के मध्य से ही निकलती है। हम अगर चाहे तो आगरा बाजार जैसा नाटक अदम गोंडवी पर भी लिख सकते है जहाँ अदम मंच पर आए बिना इस समझ के नीचले वर्ग की समस्याओं को हमारे सामने रख देंगे। और साहित्य में अपनी गज़लों के रूप और मानवीय मूल्यों की स्थान करते हुए उसे जन तांत्रिक बना देंगे। इस लेख का अंत मैं अदम के शेर से ही करता हूँ। और उम्मीद है कि अदम जैसा शायर साहित्य में जनतंत्र को बरकरार रखेंगे।

घर में ठण्डे चूल्हे पर अगर खाली पतीली है।

बताओ कैसे लिख दूँ धूप फागुन की नशीली है ॥ 11

## संदर्भ सूची


1. गोंडवी अदम ,समय से मुठभेड़ , वाणी प्रकाशन ,2018, पृष्ठ संख्या -46

2. पाण्डेय ,मैन्जर,हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान , वाणी प्रकाशन ,2013 ,पृष्ठ संख्या -168

3. पाण्डेय ,मैन्जर ,आलोचना में सहमति -असहमति,वाणी प्रकाशन ,2013 पृष्ठ संख्या -38

4. वहीं , 39

5. गोंडवी अदम ,समय से मुठभेड़ , वाणी प्रकाशन ,2018 पृष्ठ संख्या -40

6. वहीं ,40

7. वहीं ,70

8. पाण्डेय ,मैन्जर,हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान , वाणी प्रकाशन ,2013 पृष्ठ संख्या -170

9. गोंडवी अदम ,समय से मुठभेड़ , वाणी प्रकाशन ,2018 पृष्ठ संख्या -47

10. वहीं ,46

11. वहीं ,41


## ग्रंथ सूची


1. पाण्डेय ,मैन्जर ,आलोचना में सहमति -असहमति,वाणी प्रकाशन ,2013

2. पाण्डेय ,मैन्जर,हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान , वाणी प्रकाशन ,2013

3. गोंडवी अदम ,समय से मुठभेड़ , वाणी प्रकाशन ,2018